सीरतुन नबीﷺ के जल्सें और जुलूस

हज़रत मुफ्ती तकी उस्मानी (दब)

इस्लाही खुतबात हिन्दी/२ [१७९-१९५] मजमून का खुलासा.

| नबी करीमﷺ ज़िकरे मुबारक.

| सीरते तैयबा और सहाबा किराम (रदी).

| इस्लाम रस्मी मुजाहरों का दीन नहीं.

| नबी करीमﷺ की जिन्दगी हमारे लिए नमूना है.

| हमारी नियत दुरूस्त नहीं.

| नियत कुछ और है.

| दोस्त की नाराज़गी के डर से शिर्कत.

| मुकररीर का जोश देखना मक्सूद है.

| वकत गुजारी की नियत है.

| हर शख्स सीरते तैयबा से फायदा नहीं उठा सकता.

| नबी करीमﷺ सुन्नतो का मज़ाक उडाया जा रहा है.

| सीरत के जल्सें में बे-पर्दगी.

| सीरत के जल्से में मौसीकी.

| सीरत के जल्सें में नमाज़े कज़ा.

| सीरत के जल्सें और इज़ा ए मुसलीम (मुस्लमान को तक्लीफ देना).

| दूसरो की देखा देखी में जुलूस.

| हज़रत उमर और हजरे अस्वद.

| अल्लाह के लिए इस तरीके को बदले.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

| नबी करीमﷺ ज़िकरे मुबारक

नबी करीमﷺ का ज़िकर इन्सान की अज़ीम तरीन सादत है, और इस रूए ज़मीन पर किसी भी हस्ती का तज़किरा इतना बाइसे अज़र और सवाब खैरे और बरकत नहीं हो सकता, जितना नबी करीमﷺ का तज़किरा हो सकता है, लेकिन तज़किरे के साथ-साथ इन सीरते तैयबा की महफिलों में हमने बहुत सी ऐसी गलत बाते शुरू कर दी है, जिन्की वजह से ज़िकर मुबारक का सही फायदा और सही नतीजा हमे हासिल नहीं हो रहा है.

| सीरते तैयबा और सहाबा किराम (रदी)

उन गलतियों में से एक गलती ये है की हमने नबी करीमﷺ का ज़िकर मुबारक सिर्फ एक महीने यानी रबीउल अव्वल के साथ खास कर दिया है, और रबीउल अव्वल के भी सिर्फ एक दिन और एक दिन में भी सिर्फ चंद घंटे नबी करीम का ज़िकर करके हम ये समझतें है की हमने

नबी करीमﷺ का हक अदा कर दिया है, ये हुजूरﷺ की सीरते तैयबा के साथ इतना बडा जुल्म है की इस्से बडा जुल्म सीरते तैयबा के साथ कोई और नहीं हो सकता. सहाबा किराम (रदी) की पूरी जिन्दगी में कहीं ये बात आपको नज़र नहीं आएंगी, और ना आपको इस्की एक मिसाल मिलेंगी की उन्होनें 12 रबीउल अव्वल को खास जशन मनाया हो, ईद मिलादुन्नबी का एहतेमाम किया हो, या इस महीने के अंदर सीरते तैयबा की महफिलें आयोजित की हो, इस्के बजाये सहाबा किराम का तरीका ये था की उन्की जिन्दगी का एक-एक लम्हा हुजूरﷺ के तज़किरे की हैसियत रखता था, जहा दो सहाबा मिले उन्होनें नबी करीमﷺ हदीसो और आपके इरशदात, आपﷺ की दी हुई तालीमात का, आपﷺ की मुबारक जिन्दगी के मुख्तलिफ वाकियात का तज़किरा शुरू कर दिया, इसलिए उन्की हर महफिल सीरते तैयबा की महफिल थी, उन्की हर बैठक सीरते तैयबा की बैठक

थी, इस्का नतीजा ये था की उन्को नबी करीमﷺ के साथ मुहब्बत और ताल्लुक के इजहार के लिए रस्मी मुजाहरों की जरूरत ना थी, की ईद मिलादुन्नबी मनाई जा रही है और जुलूस निकाले जा रहे है, जल्सें हो रहे है, लाइटिंग की जा रही है, इस किस्म के कामो की सहाबा किराम, ताबईन और तबे-ताबईन के ज़माने में एक मिसाल भी पेश नहीं की जा सकती.

| इस्लाम रस्मी मुजाहरों का दीन नहीं

रस्मी मुजाहरे करना सहाबा किराम की आदत नहीं थी, वे इस्की रूह को अपनाए हुए थे, नबी करीमﷺ इस दुन्या में क्यूं तशरीफ लाए थे? आपका क्या पैगाम था? आपकी क्या तालीम थी? आप दुन्या से क्या चाहते थे? इस काम के लिए उन्होनें अपनी सारी जिन्दगी को वक्फ कर दिया, लेकिन इस किस्म के रस्मी मुजाहरे नहीं किए, और ये तरीका हमने गैर मुस्लीमो से लिया है, हमने देखा की गैर-मुसलीम कौमे अपने बडे-बडे लीडरो के दिन मनाया

करती है, और उन दिनो में जशन और खास महफिल आयोजित करती है, और उन्की देखा-देखी हमने सोचा की हम भी नबी करीमﷺ के तज़किरे के लिए ईद मिलादुन्नबी मनाएंगे, और ये नहीं देखा की जिन लोगों के नाम पर कोई दिन मनाया जाता है, हकीकत में ये वे लोग होते है जिन्की जिन्दगी के तमाम लम्हात को काबिले इकतीदा और काबिले तकलीद नहीं समझा जाता, बल्की या तो वो सियासी लीडर होता है, या किसी और दुन्यावी मामले में लोगों का रेहनुमा होता है, तो सिर्फ उस्की याद ताजा करने के लिए उस्का दिन मनाया गया लेकिन उस रेहनुमा के बारे में ये नहीं कहा जा सकता की उस्की जिन्दगी का एक-एक लम्हा काबिले तकलीद है, और इस दुन्या में जो कुछ किया वो सही किया है, वो मासूम और गलतियों से पाक था, इसलिए उस्की हर चीझ को अपनाया जाए, उन्मे से किसीके बारे में भी ये नहीं कहा जा सकता.

| नबी करीमﷺ की जिन्दगी हमारे लिए नमूना है

सरकारे दो जहानﷺ के बारे में अल्लाह तआला इरशाद फरमाते है की हमने आपको भेजा ही इस मक्सद के लिए था की आप इन्सानियत के सामने एक मुकम्मल और बेहतरीन नमूना पेशकरे, ऐसा नमूना बन जाए, जिस्को देख कर लोग नकल उतारे, उस्की तकलीद करे, उस्पर अमल करे, और अपनी जिन्दगी को उस्के मुताबीक ढालने की कोशिश करे, इस गर्ज़ के लिए नबी करीमﷺ को इस दुन्या में भेजा गया था, नबी करीमﷺ जिन्दगी का हर एक लम्हा हमारे लिए एक मिसाल है, एक नमूना है और एक काबिले तकलीद अमल है, और हमे नबी करीमﷺ जिन्दगी के एक-एक लम्हे की नकल उतारनी है, और एक मुस्लमान की हैसियत से हमारा ये फरीज़ा है, इसलिए हम नबी करीमﷺ को दुन्या के दूसरे लीडरो पर कियास नहीं कर सकते, की उन्का एक दिन मना लिया और बात खतम हो गई बल्की नबी करीमﷺ

की पाक जिन्दगी को हमारी जिन्दगी के एक-एक शोबे के लिए अल्लाह तआला ने नमूना बना दिया है, और सब चिझो में हमे उन्की इकतीदा करनी है, हमारा जिन्दगी का हर दिन उन्की याद मनाने का दिन है.

| हमारी नियत दुरूस्त नहीं

दूसरी बात ये है की सीरत की महफिलें और जल्सें जगह-जगह आयोजित होते है, और उन्मे नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा को बयान किया जाता है लेकिन बात असल में ये है की काम कितना ही अच्छे से अच्छा क्यूं ना हो, मगर जब तक काम करने वाले की नियत सही नहीं होगी, जब तक उस्के दिल में दाईया और जज़्बा सही नहीं होगा, उस वकत तक वो काम बेकार, बे-फायदा, बे-मसरफ, बल्कि कभी-कभी नुक्सान-देह और गुनाह का सब्ब बन जाता है, देखिए नमाज़ कितना अच्छा अमल है और अल्लाह तआला की इबादत है और कुरान और हदीस नमाज़ के फजाईल से भरे हुए है, लेकिन अगर कोई शख्स

नमाज़ इसलिए पढ रहा है ताकी लोग मुझे नेक, मुत्तकी समझे, जाहिर है की वो सारी नमाज़े बे-फायदा है, बल्की ऐसी नमाज़ पढने से सवाब के बजाये उलटा गुनाह होगा, हदीस शरीफ में नबी करीमﷺ ने इरशाद फरमाया की "जो शख्स लोगों के दिखाने के लिए नमाज़ पढे तो गोया की उसने अल्लाह के साथ दूसरे को शरीक ठहराया". (मुसनद अहमद), इसलिए की वो नमाज़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए नहीं पढ रहा है, बल्की मख्लूक को राज़ी करने के लिए और मख्लूक में अपना तकवा और नेकी का रोब जमाने के लिए पढ रहा है, इसलिए वो ऐसा है जैसे उसने अल्लाह के साथ मख्लूक को शरीक ठहराया, इतना अच्छा काम था, लेकिन सिर्फ नियत की खराबी की वजह से बेकार हो गया, और उलटा गुनाह का सब्ब बन गया. यही मामला सीरते तैयबा के सुन्ने और सुनानें का है, अगर कोई शख्स सीरते तैयबा को सही मक्सद, सही नियत और सही जज़्बे से सुनता और

सुनाता है तो ये काम बिलाशुबह अजीमुशान सवाब का काम है और बाइसे खैर और बरकत है, और जिन्दगी में इन्कलाब लाने का मुजिब है, लेकिन अगर कोई शख्स सीरते तैयबा को सही नियत से नहीं सुनता और सही नियत से नहीं सुनाता, बल्की उस्के जरीये कुछ और गरज़े और मकसद दिल में छुपे हुए है, और जिन्के तहत सीरते तैयबा के जल्सें और महफिलें आयोजित की जा रही है, तो भाईयो ये बडे घाटे का सौदा है, इसलिए की जाहिर में तो नज़र आ रहा है की आप बहुत नेक काम कर रहे है, लेकिन हकीकत में वो उलटा गुनाह का सब्ब बन रहा है, और अल्लाह तआला के अज़ाब और नाराज़गी का सब्ब बन रहा है.

| नियत कुछ और है

इस नुकते नज़र से अगर हम अपना जायजा लेकर देखें, और सच्चे दिल से नेक नियती के साथ अपने गरेबान में मूह डाल कर देखें की उन तमाम महफिलों जो आयोजित

हो रही है, क्या उन्के इस बिना पर कर रहे है, की हमारा मक्सद अल्लाह तआला को राज़ी करना हैं? और अल्लाह के रसूलﷺ की पैरवी मक्सूद हैं? क्या इसलिए महफिल आयोजित कर रहे है की नबी करीमﷺ की जो तालीमात उन महफिलों में सुनेंगे उन्को अपनी जिन्दगी में ढालने की कोशिश करेंगे? कुछ अल्लाह के नेक बंदे ऐसे भी होगे जिन्की ये नियत होगी, लेकिन एक आम तर्ज़े अमल देखिए तो ये नज़र आएंगा की महफिल आयोजित करने के मकसद ही कुछ और है, नियते ही कुछ और है, ये नियत नहीं है की इस जल्से में शिरकत के बाद हम नबी करीमﷺ की सुन्नतो पर अमल करने की कोशिश करेंगे, बल्की नियत ये है की मोहल्ले की कोई अंजूमन है, जो अपना असर रूतबा बढाने के लिए जल्सा आयोजित कर रही है, और ये ख्याल है की जल्सा सीरतुन्नबी करने से हमारी अंजूमन की शोहरत हो जाएगी, कोई जमात इसलिए जल्सा सीरतुन्नबी आयोजित कर रही है की इस

जल्सें के जरीये हमारी तारीफ होगी की बडा शानदार जल्सा किया, बडे आला दरज़े के मुकररीन बुलाएं, और बडे मजमे ने इस्मे शिरकत की और मजमे ने उन्की बडी तारीफ की, कहीं जल्सें इसलिए आयोजित हो रहे है की अपनी बात कहने का कोई और मौका तो मिलता नहीं है, कोई सियासी बात है या कोई साम्परदायक बात है जिस्को किसी और पलेटफार्म पर जाहिर नहीं किया जा सकता, इसलिए सीरतुन्नबी का एक जल्सा आयोजित करले, और उस्मे अपने दिल की भडास निकाल ले, चुनांचे उस जल्सें में पहले नबी करीमﷺ की तारीफ और तौसीफ के दो चार जुमले बयान हो गए और उस्के बाद पूरी तकरीर में अपने मकसद बयान हो रहे है, और मुखाल्लीफ पर बोमबारी हो रही है, इस गर्ज़ के लिए जल्सें आयोजित हो रहे है.

| दोस्त की नाराज़गी के डर से शिर्कत

देखने की बात ये है की अगर वाकियतन सच्चे दिल से नबी करीमﷺ की तालीमात पर अमल करने की नियत से

हमने ये महफिलें आयोजित की होती तो फिर हमारा तरीका कुछ और होता, एक घर में एक महफिलें मीलाद आयोजित हो रही है, अब अगर उस महफिल में उस्का कोई दोस्त या रिश्तेदार शरीक नहीं हुआ तो उस्को ताना दिया जा रहा है और उस्पर मलामत की जा रही है, और उस्से शिकायते हो रही है, उस महफिल में शिरकत करने वालो की नियत ये नहीं की नबी करीमﷺ की सीरत सुन्नी है और उस्पर अमल करना है बल्की नियत ये है की कहीं महफिल आयोजित करने वाले हमसे नाराज़ ना हो जाए, और उन्के दिल में शिकायत पैदा ना हो जाए, अल्लाह को राज़ी करने की फिकर नहीं है, महफिल आयोजित करने वालो को राज़ी करने की फिकर है.

| मुकररीर का जोश देखना मक्सूद है

कोई शख्स इसलिए जल्सें में शिरकत कर रहा है की उस्मे फलां मुकररीर तकरीर करेंगे, जरा जाकर देखें की वो कैसी तकरीर करते है, सुना है की बडे जोशीले और

शानदार मुकररीर है, गोया की तकरीर का मज़ा लेने के लिए जा रहे है, तकरीर के जोश और खरोश का अंदाज़ा करने के लिए जा रहे है, और ये देखने के लिए जा रहे है की फलां मुकररीर कैसे गा-गा कर शेर पढता है कितने वाकियात सुनाता है.

| वकत गुजारी की नियत है

कुछ लोग इसलिए सीरतुन्नबीﷺ के जल्सें में शिरकत कर रहे है की चलो आज कोई और काम नहीं है, और वकत गुजारी करनी है, चलो किसी जल्सें में जाकर बैठ जावो तो वकत गुजर जाएगा और बे शुमार अफराद इसलिए शरीक हो रहे है की घर में तो दिल नहीं लग रहा है और मोहल्ले में एक जल्सा हो रहा है, चलो उस्मे थोडी देर जाकर बैठ जाए, और जितनी देर दिल लगेगा, वहा बैठे रहेंगे, और जब दिल घबराएगा, उठकर चले आएंगा, इसलिए मक्सद ये नहीं की नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा को हासिल किया जाए, बल्की मक्सद ये है की कुछ

वकत गुजारी का सामान हो जाए, अगरचे कभी-कभी इस तरह वकत गुजारी के लिए जाना भी फायदेमंद हो जाता है, अल्लाह के रसूलﷺ की कोई बात कान में पड जाती है, और उस्से इन्सान की जिन्दगी बदल जाती है, ऐसे वाकियात भी हुए है, लेकिन में नियत की बात कर रहा हूं की जाते वकत नियत दुरूस्त नहीं होती, ये नियत नहीं होती की में जाकर रसूलुल्लाहﷺ की सीरत सुनकर उस्पर अमल करूंगा.

| हर शख्स सीरते तैयबा से फायदा नहीं उठा सकता

कुरान करीम ये कहता है की - तरजुमा "तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल की जिन्दगी में बेहतरीन नमूना है, और नबी करीमﷺ पाक जिन्दगी मिसाले राह है", ये एक पैगामे हिदायत है और ये एक उसवा ए हसना है, एक मुकम्मल नमूना है, लेकिन हर शख्स के लिए नमूना नहीं है, बल्की उस शख्स के लिए जो अल्लाह तआला को राज़ी करना चाहता हो, और उस शख्स के लिए जो

आखिरत के दिन को सवारना चाहता हो, और आखिरत के दिन पर उस्का पूरा ईमान और यकीन और भरोसा हो, और वो अल्लाह तआला को कसरत से याद करता हो, जिस शख्स में ये सिफते पाए जाएंगे उस्के लिए सीरते तैयबा एक पैगामे हिदायत है. लेकिन जिस शख्स के अंदर ये सिफते मौजूद नहीं और जो अल्लाह को राज़ी करना नहीं चाहता, और जो आखिरत क दिन पर भरोसा नहीं रखता, और आखिरत के दिन को सवारने के लिय ये काम नहीं करता, और वो अल्लाह को कसरत से याद नहीं करता, उस्के लिए इस बात की कोई गेरेंटी नहीं की रसूलुल्लाहﷺ की सीरते तैयबा उस्के लिए हिदायत का पैगाम बन जाएगी, सीरते तैयबा तो अबू जहल के सामने भी थी, और अबू लहब के सामने भी थी, उमैया बिन खलफ के सामने भी थी, लेकिन वे सीरते तैयबा से फायदा नहीं उठा सके. यानी वो ज़मीन ही बंजार थी, और उस बंजार जमीन में हिदायत का बीज नहीं डाला जा

सकता था, वो बार आवर नहीं हो सकता था, इसलिए अगर किसी शख्स के दिल में अल्लाह तआला को राज़ी करने की फिकर नहीं, और आखिरत को सवारने की फिकर नहीं, और अल्लाह की याद उस्के दिल में नहीं है तो फिर किसी सूरत में नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा से वो शख्स अपनी जिन्दगी में फायदा नहीं उठा सकता. इसलिए ये सारे मनाज़िर जो हम देख रहे है इस्मे बहुत सी बार हमारी नियते दुरूस्त नहीं होती, और उस्का नतीजा ये है की हज़ारों तकरीरे सुन ली, और हज़ारों महफिलों में शिरकत कर ली लेकिन जिन्दगी जैसी पहले थी वैसी आज भी है, जिस तरह पहले हमारे दिलों में गुनाहों का शौक और गुनाहों की तरफ रग्बत थी वो आज भी मौजूद है, उस्के अंदर कोई फर्क नहीं आया.

| नबी करीमﷺ सुन्नतो का मज़ाक उडाया जा रहा है

इन ही सीरते तैयबा के नाम पर आयोजित होने वाली महफिलों में बिल्कुल महफिल के दौरान हम ऐसे काम

करते है की जो सरकारे दो आलमﷺ के इरशादात के कटाई खिलाफ है. सरकारे दो आलामﷺ का नाम लिया जा रहा है, नबी करीमﷺ की तालीमात, नबी करीमﷺ की सुन्नतो का ज़िकर किया जा रहा है, लेकिन अमलन हम उन तालीमात का, उन सुन्नतो का, उन हिदायात का मज़ाक उडा रहे है जो नबी करीमﷺ लेकर आए थे.

| सीरत के जल्सें में बे-पर्दगी

हमारे मुआशरे में अब ऐसी महफिलें कसरत से होने लगी है जिनमे मिला-जुला इज्तिमा है और औरते और मर्द साथ बैठे हुए है, और सीरते तैयबा का बयान हो रहा है, नबी करीमﷺ ने औरतो को फरमाया की अगर तुम्हे नमाज़ भी पढनी हो तो मस्ज़िद के बजाये घर में पढो, और घर में अंगान के बजाये कमरे में पढो, और कमरे में बेहतर ये है की कोठरी में पढो, औरत के बारे में नबी करीमﷺ ये हुक्म दे रहे है, लेकिन उन्ही नबी करीमﷺ का ज़िकर हो रहा है, जिस्मे औरते और मर्द मिला-जुला इज्तिमात में

शरीक है, और किसी अल्लाह के बंदे को ये ख्याल नहीं आता की सीरते तैयबा के साथ क्या मज़ाक हो रहा है, पूरी सज-धज कर बेपर्दा होकर ख्वातीन शरीक हो रही है, और मर्द भी साथ मौजूद है.

| सीरत के जल्से में मौसीकी

नबी करीमﷺ ने इरशाद फरमाया था की मुझे जिस काम के लिए भेजा गया है, उस्मे से एक अहम काम ये है की में बाज़ों बासुरियों को और साज़ और सुरूर को और मौसीकी के यन्त्रो को इस दुन्या से मिटा दू, लेकिन आज उन्ही नबी करीमﷺ के नाम पर महफिल आयोजित हो रही है, जल्सा हो रहा साज़ और सुरूर के साथ नात पढी जा रही है, और उस्मे कव्वाली शरीफ हो रही है, कव्वाली के साथ लफ्ज "शरीफ" भी लग गया है, और उस्मे पूरे आब और ताब के साथ हारमूनियम बज रहा है, साज़ और सुरूर हो रहा है, आम गानो में और नबी करीमﷺ की नात में कोई फर्क नहीं रखा जा रहा है, नबी करीमﷺ के साथ

इस्से बडा मज़ाक और क्या हो सकता है. इस्के अलावा रेडियो और टेलीवीजन पर औरते और मर्द मिल कर नातें पढ रहे है, टेलीवीजन देखने वालो ने बताया की औरते पूरी सज-धज के साथ टेलीवीजन पर आ-रही है, ये क्या मज़ाक है जो नबी करीमﷺ सीरते तैयबा और नबी करीमﷺ तालीमात के साथ हो रहा है, औरत जिस्के बारे में कुरान करीम ने फरमाया (सुरे अहजाब/33) तरजुमा "ज़माना ए जाहिलियत की तरह तुम बनाव सिंघार करके मर्दों के सामने मत आओ", आज वही औरत पूरे मैक-अप और बनाव सिंघार के साथ मर्दों के सामने आ-रही है, और नबी करीमﷺ की शान में नात पढ रही है, नबी करीमﷺ की नात और सीरत के साथ इस्से बडा जुल्म और क्या हो सकता हैं? अगर आप ये समझतें है की इन चिझो की वजह से अल्लाह की रहमत नबी करीमﷺ तरफ मुतवज्जह होगी तो फिर अपसे ज्यादा धोखे में कोई और नहीं है, नबी करीमﷺ की सुन्नतो को मिटा कर, नबी

करीमﷺ तालीमात की खिलाफ उल्लंघन करके, नबी करीमﷺ सीरते तैयबा की मुखालफत करके और उस्का मज़ाक उडा कर भी अगर आप इस्के मुतमईन है की अल्लाह की रेहमते आप पर निछावर हो तो इस्से बडा धोखा इस रूए जमीन पर कोई और नहीं हो सकता. अल्लाह की पनाह ये तो अल्लाह तआला के अज़ाब और उस्के गुस्से को दावत देनी वाली बाते है, वे काम जो हुजूरﷺ की ना-फरमानी के काम है, वे हम ऍन सीरते तैयबा करते वकत करते है.

| सीरत के जल्सें में नमाज़े कज़ा

पहले बात सिर्फ जल्सों की हद तक सीमित थी की सीरते पाक का जल्सा हो रहा है उस्मे शरियत की चाहे जितनी खिलाफ वरज़ी हो रही है, किसी को परवाह नहीं, लेकिन अब तो बात और आगे बढ रही है, चुनांचे देखने और सुन्ने में आया है की नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा के जल्सें के इन्तेजामात हो रहे है, और उन इन्तेजामात में नमाज़े कज़ा

हो रही है, किसी शख्स को नमाज़ का होश नहीं, फिर रात के दो दो बजे तक तकरीरे हो रही है, और सुबह फजर की नमाज़ जा रही है, जब्की नबी करीमﷺ का इरशाद तो ये था की जिस शख्स की एक असर की नमाज़ फौत हो जाए तो वो शख्स ऐसा है जैसे उस्के तमाम माल और तमाम अहल और अयाल को कोई शख्स लूटकर ले गया, इतना अज़ीम नुक्सान है लेकिन सीरते तैयबा के जल्सें के इन्तेजामात में नमाज़े कज़ा हो रही है और कोई फिकर नहीं, इसलिए की हम तो एक मुकद्दस काम में लगे हुए है, और नबी करीमﷺ ने नमाज़ की जो ताकीद बयान फरमाई थी वो निगाहो से ओजल है.

| सीरत के जल्सें और इज़ा ए मुसलीम (मुस्लमान को तक्लीफ देना)

सीरते तैयबा का जल्सा हो रहा है, जिस्मे कुल पच्चीस तीस सुन्ने वाले बैठे है, लेकिन लाऊडस्पीकर इतना बडा लगाना जरूरी है की उस्की आवाज़ पूरे मोहल्ले में गूंजे, जिस्का

मतलब ये है की जब तक जल्सा खतम ना हो जाए उस वकत तक मोहल्ले का कोई बीमार, कोई जईफ, कोई बूढा और माजूर आदमी सो ना सके, हालांकी नबी करीम ﷺ का अमल तो ये था की आप तहज्जुद की नमाज़ के लिए बेदार हो रहे है, लेकिन किस तरह बेदार हो रहे हैं? हजरते आइशा सिद्दीका (रदी) बयान फरमाती है की धीरे से उठे, कहीं ऐसा ना हो की आइशा (रदी) की आंख खुल जाए, आहिस्ता से दरवाजा खोला, कहीं ऐसा ना हो की आइशा (रदी) की आंख खुल जाए, और नमाज़ जैसे फरिज़े के अंदर नबी करीम ﷺ का ये अमल था की हदीस में नबी करीम ﷺ ने फरमाया की अगर में नमाज़ में किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूं तो नमाज़ को मुख्तसर कर देता हूं, कहीं ऐसा ना हो की उस बच्चे की आवाज़ सुनकर उस्की मां किसी मशक्कत में मुब्तला हो जाए, लेकिन यहां बिला जरूरत, बगैर किसी वजह के, सिर्फ २५,३० सुन्ने वालो को सुनानें के लिए इतना बडा लाऊडस्पीकर नसब

है की कोई जईफ, बीमार आदमी अपने घर में सो नहीं सकता और इन्तेजाम करने वाले इस्से बे-खबर है की कितने बडे कबीरा गुनाह का काम हो रहा है, इसलिए की इज़ा ए मुसलीम (मुस्लमान को तक्लीफ देना) कबीरा गुनाह है, इस्का किसी को एहसास नहीं. (निसाई)

| दूसरो की देखा देखी में जुलूस

हमारा ये सारा तरीका इस बात पर दलालत कर रहा है की हकीकत में नियत दुरूस्त नहीं है, नबी करीमﷺ की तालीमात को अपनाने और उस्पर अमल करने की नियत नहीं है बल्कि मकसद कुछ और है, और जैसा की मैंने अरज़ किया, पहले सिर्फ जल्सों की हद तक बात थी, अब तो जल्सों से आगे बढकर जुलूस निकलना शुरू हो गए, और उस्के लिए इस्तिदलाल ये किया जाता है की फलां फिरका फलां महीने में अपने इमाम की याद में जुलूस निकालता है तो फिर हम अपने नबी के नाम पर रबीउल अव्वल में जुलूस क्यूं ना निकाले, गोया की अब

उन्की नकल उतारी जा रही है की जब मुहर्रम का जुलूस निकलता है तो रबीउल अव्वल का भी निकलना चाहिएं, बजाते खुद ये समझ रहे है की हम नबी करीमﷺ के अहकाम के मुताबीक अमल कर रहे है, और नबी करीमﷺ अज़मत और मुहब्बत का हक अदा कर रहे है. लेकिन इसपर जरा गौर करे की अगर नबी करीमﷺ खुद उस जुलूस को देख ले जो आपके नाम पर निकाला जा रहा है तो क्या नबी करीमﷺ उस्को गवारा और पसंद फरमाएंगे? नबी करीमﷺ ने तो हमेशा इस उम्मत को इन रस्मी मुज़ाहरों से बचने की तलकीन फरमाई, चुनांचे नबी करीमﷺ ने फरमाया की जाहीरी और रस्मी चिझो की तरफ जाने के बजाये मेरी तालीमात की रूह को देखो, और मेरी तालीमात को अपनी जिन्दगी में अपनाने की कोशिश करो, सहाबा किराम (रदी) की पूरी हयाते तैयाबा में कोई शख्स एक मिसाल इस बात पर पेश कर सकता है की नबी करीमﷺ की सीरत के नाम पर रबीउल

अव्वल में या किसी और महीने में कोई जुलूस निकाला गया हो? बल्की पूरे तेरह सौ साल की तारीख में कोई एक मिसाल कम से कम मुझे तो नहीं मिली की किसी ने आपके नाम पर जुलूस निकाला हो. हा शियां हजरात मुहर्रम में अपने इमाम के नाम पर जुलूस निकाला करते थे, हमने सोचा की उन्की देखा देखी में हम भी जुलूस निकालेंगे, हालांकी नबी करीमﷺ का इरशाद है "जो शख्स किसी कौम के साथ मुशाबहत इख्तियार करता है वो उन्मे से हो जाता है" (अबू दाउद) और सिर्फ जुलूस निकालने पर बस नहीं की, बल्की उस्से आग बढकर ये हो रहा है की काबा शरीफ की शबीहे बनाई जा रही है, रोज़ा-ए-अक्दस की शबीहे बनाई जा रही है, गुम्बदे खिज़रा की शबीहे बनाई जा रही है, और दुन्या भर की औरते, बच्चे, बूढे इस्को बरकत वाला समझ कर बरकत हासिल करने के लिए उस्को हाथ लगाने की कोशिश कर रहे है, वहा जाकर दुआए मांगी जा रही है, मन्नतें मांगी जा

रही है, नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा के नाम पर ये क्या हो रहा हैं? नबी करीमﷺ शिर्क को, बिद्दतो को, और जाहिलियत को मिटाने के लिए दुन्या में तशरीफ लाए, और आज आपने नबी करीमﷺ ही के नाम ये सारी बिद्दते शुरू कर दी, रोज़ा-ए-अक्दस को इस गुम्बद से कोई मुनासबत नहीं, जो आपने अपने हाथो बना कर खडा कर दिया है, लेकिन इस्का नतीजा ये है की उस्को मुकद्दस समझ कर बरकत हासिल करने के लिए कोई उस्को चूम रहा है, कोई उस्को हाथ लगा रहा है.

| हज़रत उमर और हजरे अस्वद

हज़रत उमर (रदी) तो हजरे अस्वद को चूमते वकत फरमाते है की ऍ हजरे अस्वद में जानता हूं तू एक पत्थर के सिवा कुछ नहीं है, अल्लाह की कसम अगर नबी करीमﷺ को मैंने तुझे चूमता हुआ ना देखा होता तो में तुझे कभी ना चूमता, लेकिन मैंने नबी करीमﷺ को चूमते हुए देखा है, और उन्की ये सुन्नत है इस वास्ते में तुझे चूमता

हूं. (बुखारी) वहा तो हजरे अस्वद को ये कहा जा रहा है, और यहां अपने हाथ से एक गुम्बद बना कर खडा कर दिया, अपने हाथ से एक काबा बना कर खडा कर दिया, और उस्को मुतबर्रक समझा जा रहा है और उस्को चूमा जा रहा है, ये तो नबी करीमﷺ जिस चीझ को मिटाने के लिए तशरीफ लाए थे उसी को जिन्दा किया जा रहा है. लाइटिंग हो रहा है, रिकार्डिग हो रही है, गाने बजाने हो रहे है, तफरीह बाज़ी हो रही है, नबी करीमﷺ के नाम पर मेला आयोजित किया हुआ है, ये दीन को खेलकूद बनाने का एक बहाना है, जो शैतान ने हमे सिखा दिया है अल्लाह के लिए हम अपनी जानों पर रहम करे और नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा की अज़मत और मुहब्बत का हक अदा करे और उस्की अजूमत और मुहब्बत का हक ये है की अपनी जिन्दगी को उन्के रास्ते पर ढालने की कोशिश करे.

| अल्लाह के लिए इस तरीके को बदले

सीरते तैयाबा के जल्सें में कोई आदमी इस नियत से नहीं आता की हम इस महफिल में इस बात का अहद करेंगे की अगर हम नबी करीमﷺ की तालीमात के खिलाफ पहले पचास काम किया करते थे तो अब कम से कम उस्मे से दस छोड देंगे, किसी ने इस तरह अहद किया? किसी ने इस तरह ईद मिलादुन्नबी मनाई? कोई एक शख्स भी इस काम के लिए तैयार नहीं, लेकिन जुलूस निकालने के लिए, मेले सजाने के लिए, मेहराबे खडी करने के लिए, लाइटिंग करने के लिए हर वकत तैयार है. इन कामो पर जितना चाहो रूपया खर्च करवा लो, और जितना चाहो, वकत लगवा लो, इसलिए की इन कामो में नफ्स को लत्फ मिलता है, लज़्ज़त आती है और नबी करीमﷺ की सीरते तैयबा का जो असल रास्ता है उस्मे नफ्स और शैतान को लज़्ज़त नहीं मिलती. अल्लाह के लिए हम अपने इस तरीके को खतम करे और नबी करीमﷺ की अज़मत और मुहब्बत का हक पहचाने, अल्लाह तआला हम सब्को सुन्नतो पर अमल करने की तौफीक अता फरमाए. आमीन.